विषय हिन्दी

प्राथमिक स्तर

पहली व दूसरी कक्षा

बच्चे के व्यक्तित्व निर्माण में मातृभाषा का महत्वपूर्ण योगदान है। भाषा प्रत्येक बच्चे के दृष्टिकोण, उसकी रूचियों, क्षमताओं यहां तक कि मूल्यों और मनोवृत्तियों को भी आकार देती है। भाषा सोचने, महसूस करने और चीजों से जुड़ने का एक उत्तम साधन है। भाषा ही बच्चे को समझदार, विचारवान, सभ्य और शिक्षित बनाती है। मातृभाषा में ही बच्चे का मस्तिष्क सबसे पहले क्रियाशील होता है। अतः मातृभाषा बच्चे की पहली उपलब्धि और सहायिका है। यही कारण है कि सभी शिक्षाशास्त्री एकमत हैं कि प्राथमिक स्तर की शिक्षा में संप्रेषण का माध्यम मातृभाषा ही होना चाहिए। इसके लाभ शोध द्वारा स्थापित किए जा चुके हैं।

विद्यालय बच्चों के लिए ऐसा स्थान है जो कई दृष्टियों से घर से भिन्न है। विद्यालय के अपने नियम–कायदे हैं। बच्चे कुछ घंटों के लिए अपने परिवार से दूर हो जाते हैं। परन्तु बच्चे अपने साथ अपनी भाषा, अपने अनुभव एवं दुनिया को देखने का अपना दृष्टिकोण आदि लेकर विद्यालय आते हैं। इन्हीं सबका उपयोग करते हुए शिक्षक को बच्चों से आत्मीय संबंध बनाना पड़ता है ताकि विद्यालय के नवीन परिवेश में बच्चे अपनापन अनुभव करें। बच्चों के घर की भाषा और विद्यालय की भाषा के बीच के संबंध को उसकी विविधता एवं लचीलेपन के साथ देखना अत्यन्त आवश्यक है। प्रत्येक बच्चे की भाषा अपने आप में पूर्ण होती है इसलिए उसे किसी मापदंड पर आंकना उचित नहीं है।

बच्चे घर–परिवार एवं परिवेश से प्राप्त बोलचाल की भाषा के अनुभवों को लेकर ही विद्यालय आते हैं। पहली बार स्कूल में आने वाला बच्चा शब्दों के अर्थ और उनके प्रभाव से परिचित होता है। लिपिबद्ध चिह्न और उनसे जुड़ी ध्वनियां बच्चों के लिए अमूर्त हैं, इसलिए पढ़ने का प्रारम्भ अर्थ से ही हो और किसी उद्देश्य के लिए हो। यह उद्देश्य कहानी सुनकर, पढ़कर आनंद लेने के रूप में भी हो सकता है। धीरे–धीरे बच्चों में भाषा की लिपि से परिचित होकर अपने परिवेश में उपलब्ध लिखित भाषा को भी पढ़ने समझने की जिज्ञासा उत्पन्न होती है। भाषा शिक्षण की इस प्रक्रिया के मूल में बच्चों के बारे में यह अवधारणा है कि बच्चे दुनिया के बारे में अपनी समझ और ज्ञान का निर्माण स्वयं करते हैं। यह निर्माण किसी के सिखाए जाने या जोर जबरदस्ती से नहीं बल्कि बच्चों के स्वयं के अनुभवों और आवश्यकताओं से होता है। इसलिए बच्चों को ऐसा वातावरण मिलना जरूरी है जहां वे बिना किसी रोक–टोक के अपनी उत्सुकता के अनुसार अपने परिवेश की खोज–बीन कर सकें।

यही अवधारणा बच्चों के भाषिक कौशलों पर भी लागू होती है। स्कूल में आने पर बच्चे प्रायः स्वयं को बेझिझक अभिव्यक्त करने में असमर्थ पाते हैं क्योंकि जिस भाषा में वे सहज रूप से अपनी राय, अनुभव, भावनाएं आदि व्यक्त करना चाहते हैं वह स्कूल में प्रायः स्वीकृत नहीं होती। भाषा शिक्षण को बहुभाषी संदर्भ में रखकर देखने की आवश्यकता है। कक्षा में बच्चे अलग–अलग भाषाई–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आते हैं। कक्षा में इनकी भाषाओं का स्वागत किया जाना चाहिए और उनमें बच्चों से सहज अभिव्यक्ति क्षमता का उपयोग करते हुए हिन्दी पढ़ाई जानी चाहिए। शिक्षक बहुभाषिकता की महत्ता को समझकर कक्षा में उसका उपयोग करे, तभी वह बच्चों को

अपने परिवेश में स्थित सांस्कृतिक और भाषिक विविधता के प्रति संवेदनशील बना सकता है। आज बहुभाषिकता को बच्चे के व्यक्तित्व विकास के लिए संसाधन के रूप में विकसित करने की आवश्यकता है। हिमाचल के संदर्भ में हर प्राथमिक शिक्षक का यह दायित्व है कि वे ग्रामीण परिवेश से आने वाले बच्चे की स्थानीय बोली का सम्मान करे। उसे अभिव्यक्ति का उचित अवसर दे और परिमार्जित भाषा को एक दम बच्चे पर न थोपें ताकि बच्चे में अभिव्यक्ति–कौशल का उचित विकास हो। अतएव प्रारंभिक स्तर की प्रथम दो कक्षाओं के लिए राष्ट्रीय स्तर पर निम्न उद्देश्य रखे गए हैं –

उद्देश्य

1. बच्चों में अपने अनुभव और विचार बताने की इच्छा और उत्सुकता जगाना।
   - बच्चे स्कूल के वातावरण में अपनापन महसूस करें।
   - वे घर की भाषा और स्कूल की भाषा में आपसी संबंध बनाते हुए उसको विस्तार दे सकें।
   - बच्चों को प्रश्न पूछने, अपनी बात कहने का भरपूर मौका मिले।
2. बच्चों में दूसरों की बात सुनने में रूचि और धैर्य पैदा करना, उनसे सुनी बात पर टिप्पणी दे पाना।
3. बच्चे द्वारा अक्षर जोड़कर पढ़ने की बजाए समझकर पढ़ना।
   - परिवेश में उपलब्ध संदर्भों, चित्रों और छपी हुई सामग्री से परिचित होने के कारण बच्चा अनुमान से पढ़ने का प्रयास कर सकेगा।

4. बच्चों द्वारा अपनी दुनिया तथा अपने पूर्वज्ञान की मदद से पाठ्यसामग्री और स्कूली परिवेश में उपलब्ध लिखित सामग्री से अर्थ ग्रहण करना, जैसे –

   - पढ़ने की प्रक्रिया को दैनिक जीवन की (स्कूल और बाहर की) जरूरतों से जोड़ना, जैसे कक्षा और स्कूल में अपना नाम, अपनी मनपसन्द पाठ्यसामग्री और पाठ्यपुस्तक का नाम पढ़ना।
   - परिवेश में उपलब्ध छपी हुई सामग्री (चित्र और शब्द) को देखकर बच्चे संदर्भ से परिचित होने के कारण अनुमान लगाकर पढ़ने का प्रयास कर सकते हैं।

5. सुनी और पढ़ी कहानियों और कविताओं से अपने अनुभव जोड़ पाना और सहज ढंग से अभिव्यक्ति कर पाना।
6. चित्रकारी को स्वयं की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाना।

   - बच्चे स्वाभाविक अभिव्यक्ति के लिए किसी प्रकार का रेखांकन कर सकते हैं।

7. लिपि चिह्नों को देखकर और उनकी ध्वनियों को सुनकर और समझकर उनमें सहसंबंध बनाते हुए लिखने का प्रयास कर सकें।

पाठ्यसामग्री

उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु पहली व दूसरी कक्षा के लिए अलग–अलग एक–एक पुस्तक निर्धारित की जाएगी। इन पाठ्यपुस्तकों में ही पर्याप्त अभ्यास कार्य शामिल किया जाएगा। रचनाओं के चयन में ध्यान रखा जाएगा कि वे रोचक और बच्चों के अपने परिवेश और अनुभव के दायरे से जुड़ी हुई हों। उनमें पर्यावरण संबंधी ज्ञान और चिंता समाहित हो। वे लिंग

समानता, शांति और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता विकसित करने वाली हों। कार्य और श्रम के प्रति निष्ठा उत्पन्न करने वाली हों, और कलात्मक दृष्टि निर्मित करने और मूल्य चेतना जगाने में सहायक हों।

प्राथमिक स्तर के लिए अध्यापकों को संबोधित एक पुस्तक का निर्माण भी किया जा सकता है, जिसमें कक्षा में उचित वातावरण निर्माण, विभिन्न भाषायी परिवेश से आए बच्चों से सहज संबंध, विभिन्न भाषाई कौशलों का विकास, पाठ्यसामग्री के उचित उपयोग, विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के लिए शिक्षण युक्तियों एवं दृश्य सामग्री के उचित उपयोग एवं मूल्यांकन आदि पर चर्चा होगी।

बच्चों को ध्यान में रखकर आवश्यक दृश्य–श्रव्य सामग्री के उचित उपयोग एवं मूल्यांकन आदि पर चर्चा होगी।

सर्वशिक्षा अभियान के तहत चौथी–कक्षा तक संशोधित पुस्तकें स्कूलों में लगाई गई हैं। पांचवी कक्षा की पुस्तकों की विद्यालय स्तर पर परख की जा रही है। प्रथम और द्वितीय कक्षा के लिए हिंदी भाषा, गणित तथा परिवेश को जानकारी एक ही पुस्तक में दी जा रही है। जिससे बच्चों पर बोझ न पड़े, जो राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के दिशानिर्देशों के अनुरूप है। पहली कक्षा की निर्धारित पाठ्यसामग्री बच्चों की विद्यालय के प्रति तत्परता बढ़ाने, परिवेश की जानकारी, स्वच्छता की जानकारी, बड़ों के प्रति सम्मान की भावना पैदा करने, नैतिक मूल्यों के विकास के लिए आवश्यक सामग्री उपलब्ध करवाती है। अतः प्रथम कक्षा के अंत में भाषा की दृष्टि से हिन्दी की सम्पूर्ण वर्णावली की जानकारी (संयुक्ताक्षरों को छोड़) दो–तीन वर्णों से बनने वाले वे शब्द जिससे विद्यार्थी पहले से ही परिचित हैं तथा मात्राओं की जानकारी दी जा रही है। गणित की प्रारम्भिक जानकारी भी खेल–खेल में कविताओं, कहानियों तथा वार्तालाप

के माध्यम से देकर पर्याप्त अभ्यास सुझाए गए हैं। इस प्रकार 1 से 100 तक गिनती पढ़ने लिखने की जानकारी 5 तक के पहाड़े की जानकारी तथा जमा व घटाव की सामान्य जानकारी दी जा रही है। पहचान के पक्षियों, जानवरों, पौधों की जानकारी भी सहज रूप में दी जा रही है जिससे बच्चे अपने परिवेश से जुड़ाव महसूस कर सकें। इस प्रकार पहली व दूसरी कक्षा के लिए सर्वशिक्षा अभियान के अंतर्गत बनाई गई पुस्तकें, जिनमें भाषा, पर्यावरण शिक्षा और गणित को एक साथ रखा गया है, वह छोटे बच्चों के मनोविज्ञान और सीखने की प्रक्रिया के अनुकूल है।

कल्पना शक्ति के विकास को पाठ्यसामग्री में पर्याप्त स्थान नहीं मिला है। अतः और अधिक चित्र–कथाएं सुझाई जा सकती हैं। कविता और कहानियों की संख्या को कुछ कम करके मात्राओं आदि के अभ्यास के लिए अतिरिक्त समय दिया जा सकता है। इस प्रकार के परिवर्तन से कक्षा में बच्चों की भागीदारी बढ़ाई जा सकती है जिससे संज्ञानात्मक तथा भावात्मक कौशलों की प्राप्ति सहज तथा मनोवैज्ञानिक रीति से हो सकेगी।

अतः क्रियाकलाप आधारित अभ्यास–सामग्री के समावेश से संतुलित पाठ्यसामग्री का विकास किया जा सकता है। प्रथम कक्षा के कक्ष में पर्याप्त मात्रा में पाठ्य–सामग्री विषयक चार्ट होने चाहिए। फलैश कार्डो का प्रयोग एवं ब्लाक्स देकर शब्द निर्माण करवा कर सुरूचि संपन्न वातावरण बनाया जा सकता है।

अतः कुछ पाठों में परिवर्तन से और ऐसे अभ्यास–प्रश्नों के समावेश से, जिससे कक्षा में बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित की जा सके, पाठ्यसामग्री रुचिकर तथा कक्षा के अनुभव को मनोरंजक बनाया जा सकता है।

शिक्षण युक्तियां

- बच्चों की मौलिकता एवं सहज रचनाशक्ति को सामने लाने का शिक्षक का प्रयास भाषा शिक्षण की प्राथमिकता होती है।
- कक्षा में सहज आत्मीय वातावरण निर्मित करने के लिए बच्चों से उनके घर, परिवेश, पसंद–नापसंद, संगी–साथियों के बारे में बातचीत करनी चाहिए ताकि उनकी झिझक खुल सके।
- कक्षा एवं स्कूल में उपलब्ध स्थान का उपयोग अध्यापक को इस प्रकार करना चाहिए कि वह बच्चों के भाषायी विकास के अनुकूल वातावरण निर्मित कर सके।
- कक्षा की दीवारों पर बच्चों द्वारा निर्मित एवं एकत्रित चित्रों एवं रचनाओं तथा शिक्षक द्वारा एकत्रित चित्रों एवं रचनाओं को इस प्रकार लगाना चाहिए कि बच्चे उसे सरलता से देख सकें। चित्र वार्तालाप एवं लेखन की गतिविधियों के लिए उपयोगी होते हैं।
- कक्षा में भाषा की विविधता के प्रति संवेदनशील बनकर उसका उपयोग भाषा शिक्षण में करना चाहिए। ग्रामीण बच्चों को स्थानीय बोली में बेझिझक अपनी बात कहने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
- शिक्षण प्रक्रिया को रुचिकर एवं वैविध्यपूर्ण बनाने के लिए शिक्षण सामग्री विविध स्त्रोतों से एकत्र की जानी चाहिए जैसे दृश्य–श्रव्य सामग्री, चार्ट, फ्लैश कार्ड्स, पत्र–पत्रिकाओं से कतरने आदि।

- चित्र दिखाकर बच्चों से कहानी सुनाने के लिए कहा जा सकता है।
- कहानी सुनाकर बच्चों से सुनी गई कहानी को अपने शब्दों में सुनाने के लिए कह सकते हैं।
- गीत एवं कविता की प्रस्तुति उचित लय एवं हाव–भाव के साथ होनी चाहिए।
- बच्चों में रेखांकन और चित्रांकन के माध्यम से लेखन कौशल का विकास किया जा सकता है।
- चित्र बनाकर उस चित्र के आधार पर बच्चों से चार–पांच वाक्य लिखने को कहा जा सकता है।
- शिक्षण प्रक्रिया में समग्रतावादी दृष्टिकोण अपनाया जाना चाहिए।
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए उपयुक्त शिक्षण सामग्री का इस्तेमाल किया जाए।

मूल्यांकन

मूल्यांकन का उद्‌देश्य बच्चों की सीखने की क्षमता का आकलन करना है और सीखने की कठिनाईयों तथा बच्चों की समस्याओं को पहचानना है। विद्यार्थी विशेष की समस्या को पहचान कर उसके अनुसार शिक्षण विधि में सुधार मूल्यांकन का एक महत्वपूर्ण अंग है। पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों का मूल्यांकन पूर्णतया अनौपचारिक एवं अप्रत्यक्ष होना चाहिए तथा मूल्यांकन निष्पक्ष, न्यायपूर्ण और दायित्वपूर्ण हो। बच्चों की मौलिकता, कल्पनाशीलता, सृजनशीलता के आकलन के पर्याप्त अवसर हों।

कक्षा में शिक्षक इस बात का प्रयास करें कि प्रत्येक गतिविधि में बच्चे की सहभागिता हो। जांच की प्रक्रिया का प्रारम्भ एक सतर्क अवलोकन के माध्यम से किया जाना चाहिए जिससे यह पता चल सके कि वह क्या जानते हैं और उन्हें क्या जानने की जरूरत है। शिक्षक उनकी प्रत्येक गतिविधि का निरीक्षण करें, केवल सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने का ही नहीं।

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का मूल्यांकन उनकी क्षमता और सीमाओं को ध्यान में रखकर किया जाए। इस स्तर पर किसी भी रूप में मौखिक और लिखित औपचारिक परीक्षा न ली जाए।

तीसरी से पांचवीं कक्षा

तीसरी कक्षा तक आते–आते बच्चे स्कूल के वातावरण में घुलमिल जाते हैं। स्कूल का वातावरण और दूसरे बच्चों का साथ उन्हें हिन्दी भाषा के माध्यम से स्थानीय, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक विविधताओं से भी प्रत्यक्ष–परोक्ष में परिचित करवाता है। इस स्तर पर बच्चे की भाषा से जुड़े कौशलों की प्रकृति में गुणात्मक बदलाव आएगा। उनमें स्वतन्त्र रूप से पढ़ने की आदत विकसित होगी। पढ़ी हुई सामग्री से वे संज्ञानात्मक और भावात्मक स्तर पर जुड़ेंगे और उसके बारे में स्वतन्त्र व मौलिक विचार व्यक्त कर सकेंगे। अतः यहां तक आते आते लिखना एक प्रक्रिया के रूप में प्रारम्भ हो जाता है। वे अपने विचारों को व्यवस्थित ढंग से लिखने लगते हैं। अतः ऐसी पाठ्यसामग्री का चयन और निर्माण किया जाएगा जिससे बच्चों की सहज जिज्ञासा, कल्पनाशीलता, सृजनात्मकता और अभिव्यक्ति कौशल को उभरने का अवसर मिले।

उद्देश्य

1. बच्चों में पुस्तकों के प्रति रुचि जागृत करना –
   - पाठ्यपुस्तक की विधाओं से परिचित होना और उससे प्रेरित हो कर उन विधाओं की अन्य पुस्तकें पढ़ना।
   - मुख्य बिन्दु/विचार को ढूंढने के लिए विषय–सामग्री की बारीकी से जांच करना।
   - विषय सामग्री के माध्यम से नए शब्दों का अर्थ जानने की कोशिश करना।
2. पूर्व अर्जित भाषायी कौशलों का उत्तरोत्तर विकास करना।
   - दूसरे के विचारों को सुनकर समझने और अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकना।
   - दूसरों के विचारों को पढ़कर समझने की योग्यता का विकास करना।
   - पठन के द्वारा ज्ञानार्जन एवं आनंद प्राप्ति में समर्थ बनाना।
   - अध्ययन की कुशलता का विकास करना।
   - स्वतन्त्रता और आत्मविश्वास के साथ लिख पाना।
   - मनपसन्द विषय का चुनाव कर लिख सकना।
   - विषयवस्तु और विचारों के प्रस्तुतीकरण में लेखन की तकनीक का विकास करना।
   - दूसरों की अभिव्यक्ति को सुनकर उचित गति से शब्दों एवं वाक्यों को लिख सकना।

3. भाषा को अपने परिवेश और अपने अनुभवों को समझने का माध्यम मानना और उसका सार्थक उपयोग कर सकना।

- कक्षा में बच्चों को बहुभाषिक और बहुसांस्कृतिक संदर्भों से जोड़ना।
- बच्चों की कल्पनाशीलता और सृजनात्मकता को विकसित करना।
- भाषा के सौंदर्य की सराहना करने की योग्यता का विकास करना।
- बच्चे की स्थानीय बोली तथा उस बोली से प्राप्त संस्कारों का भाषा की कक्षा में सार्थक उपयोग करना।

पाठ्यसामग्री (कक्षा 3,4,5)

प्रत्येक कक्षा (3,4,5) के लिए एक – एक पाठ्यपुस्तक निर्धारित की जाएगी। इन पाठ्यपुस्तकों में ही पर्याप्त अभ्यास कार्य शामिल होगा। पुस्तकों की विषय–सामग्री उद्देश्यों और शैक्षिक क्रियाकलापों पर आधारित होगी। सामग्री का चयन कक्षा 1और 2 में विकसित हुए भाषायी कौशल और विषयों को ध्यान में रखकर किया जाएगा।

पाठ्यसामग्री बोझिल नहीं होनी चाहिए। अभ्यास–सामग्री का निर्माण इस तरह किया जाएगा ताकि बच्चों की कल्पनाशीलता का समुचित उपयोग हो। तथा उनमें सृजनात्मकता का विकास हो। पाठ्यसामग्री का चयन बच्चों के परिवेश से होना चाहिए ताकि उन्हें स्कूली परिवेश में अपनी मनोवृति के अनुकूल वातावरण मिले। अभ्यास कार्य में इस तरह से बदलाव अपेक्षित हैं जिससे सीखने की प्रक्रिया में बच्चों की और अधिक

भागीदारी सुनिश्चित की जा सके। वार्तालाप–शैली के पाठों का समावेश कर पाठ्यसामग्री को रोचक बनाया जाएगा। प्रासंगिक चित्रों के समावेश से पुस्तकों को और अधिक आर्कषक और गाह्य बनाया जाएगा। भाषायी कौशलों के उचित विकास के लिए उद्देश्यों के अनुरूप आवश्यक प्रयास किए जाएंगे। कुल मिलाकर पाठ्य–सामग्री के विकास तथा पाठों के चयन में निम्न बातों का ध्यान रखा जाएगा –

- मनोवैज्ञानिक दृष्टि से बच्चों के स्तर के अनुरूप सुंसगत विषयों का चयन।
- विषयों के चयन और प्रस्तुतीकरण में संविधान में निहित मूल्यों की परोक्ष ध्वनि।
- हर विषयों में एक दूसरे के बीच अंतर–अनुशासनात्मक और विषयगत अंतर्सम्बन्ध।
- विद्यालय में दिए जाने वाले ज्ञान और बच्चों के नित्यप्रति के अनुभव तथा उससे प्राप्त ज्ञान के बीच अंतर्सम्बन्ध।
- पर्यावरण संबंधी ज्ञान का प्रत्यक्ष–परोक्ष समावेश।
- लिंग समानता, शांति–स्वास्थ्य तथा मानसिक–शारीरिक हीनता से युक्त बच्चों की आवश्यकता के प्रति बच्चों में संवेदनशीलता उत्पन्न करना।
- कार्य सम्बन्धी दृष्टिकोण और मूल्यों का समावेश।
- भारतीय और प्रादेशिक कला और हस्तकला की विरासत का समावेश ताकि सौन्दर्य मूलक और मूल्यगत भावना का विकास हो सके।
- स्वतः सुलभ प्रौद्योगिकी का प्रयोग।

- क्रियाशीलता और सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करना तथा बच्चों की सहभागिता और पहल सुनिश्चित करना।

कक्षा 3,4 और 5 के बच्चों को अतिरिक्त पठन के लिए भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इस स्तर पर पूरक अध्ययन के लिए पाठ्यसामग्री का विकास भी किया जा सकता है।

व्याकरण के बिन्दु

कक्षा – 3

- तरह–तरह के पाठों (पाठ्यपुस्तक व अन्य) के संदर्भ में और कक्षा के संदर्भ में संज्ञा, विशेषण और वचन की पहचान और व्यावहारिक प्रयोग।
- गणित के पाठ्यक्रम के अनुरूप हिंदी में संख्याएं, संयुक्ताक्षरों की पहचान।

कक्षा – 4

- तरह–तरह के पाठों (पाठ्यपुस्तक के व अन्य) के संदर्भ में और कक्षा के संदर्भ में सर्वनाम और लिंग की पहचान।
- विशेषण का संज्ञा के साथ सुसंगत प्रयोग, वचनों का प्रयोग।

कक्षा – 5

- तरह–तरह के पाठों के संदर्भ में (पाठ्यपुस्तक के व अन्य) और कक्षा के संदर्भ में क्रिया, काल और कारक चिह्नों की पहचान।
- शब्दों के संदर्भ में लिंग का प्रयोग।

अभ्यास प्रश्नों के ही माध्यम से बच्चों को व्याकरण सिखाया जाए। इस प्रकार के अभ्यास दिए जाएं जिनसे बच्चे सहज रूप से संज्ञा, सर्वनाम और शब्द व्यवस्था (पर्याय और विलोम–स्तरानुकूल) की जानकारी प्राप्त करें जैसे चाँद के पर्यायवाची शब्दों का अभ्यास कराना हो तो अभ्यास दिया जा सकता है –

चाँद को तुम और क्या–क्या कहते हो?

अभ्यास प्रश्नों के माध्यम से व्याकरण सीखना बच्चे के लिए नीरस, बोझिल और उबाऊ प्रक्रिया नहीं होगी।

शिक्षण युक्तियां

कक्षा एक और दो के लिए सुझाई गई युक्तियों के साथ ही निम्नलिखित क्रियाकलापों का आयोजन भाषा शिक्षण के लिए किया जा सकता है –

- बच्चों की रुचि के अनुसार परिचित विषय या प्रसंग पर चर्चा।
- कहानी, नाटक के पात्रों का अभिनय आदि का आयोजन कराया जाए।

- अनौपचारिक एवं औपचारिक परिस्थितियों में परिचित एवं पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त पुस्तकों से कहानी, कविता ढूंढने, पढ़ने और सुनाने के लिए कहना।
- उचित गति एवं प्रवाह के साथ पढ़ने पर बल दें।
- दूसरों की हस्तलिखित सामग्री, पत्र आदि पढ़वाए जा सकते हैं।
- सरल एवं परिचित विषयों पर वाक्य, अनुच्छेद लेखन।
- अनुभव पर आधारित घटना का विवरण लेखन।
- अनौपचारिक एवं औपचारिक पत्र लेखन।
- वर्ग–पहेली भरवाना।
- चित्र दिखाकर उस पर आधारित कविता, कहानी लेखन।
- संदर्भ पुस्तकों को पढ़ने तथा कठिन शब्दों को शब्दकोश में से देखकर उनके अर्थ समझने का अवसर दिया जाए।
- अधूरी कहानी को पूरी कर सुनाने तथा लिखने को कहा जा सकता हैं।
- पुस्तकालय समृद्ध करने हेतु प्रयास।

मूल्यांकन

मूल्यांकन का उपयोग बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए किया जाता है इसीलिए पहली कक्षा से बारहवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों के लिए सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति ही श्रेष्ठ पद्धति है। पहली और दूसरी कक्षा में मूल्यांकन बच्चों की गतिविधियों के अवलोकन के आधार पर किया जाना चाहिए एवं उसे पता भी नहीं होना चाहिए कि उनका मूल्यांकन हो रहा है।

तीसरी से पांचवी कक्षा के मूल्यांकन में थोड़ा बदलाव होगा और इस स्तर पर कुछ औपचारिक मूल्यांकन भी किया जाएगा। यहां बच्चों को पता होना चाहिए कि उनका मूल्यांकन हो रहा है। लेकिन यह प्रक्रिया उनके मन में डर पैदा करने वाली न हो। सत्र में कई बार छोटी-छोटी लिखित और मौखिक परीक्षाएं ली जाएं न कि एक ही बार।

मूल्यांकन करते समय शिक्षक द्वारा बच्चे की प्रगति की तुलना किसी पूर्व कल्पित मापदंड से न की जाए। उनकी प्रगति का लगातार और सूक्ष्म आकलन किया जाए और प्रत्येक बच्चे का रिकार्ड रखा जाना चाहिए जिसमें प्रत्येक बच्चे की प्रगति के बारे में टिप्पणी लिखनी चाहिए। शिक्षक को बच्चों की विभिन्न गतिविधियों पर ध्यान रखते हुए छोटे समूह में काम करते हुए, कापियां या दूसरी जगह पर लिखित कार्य करते हुए आदि।

प्राथमिक कक्षाओं में भाषा ज्ञान की उपलब्धि बच्चों का न केवल भाषा विशेष में प्रगति का मार्ग प्रशस्त करती है वरन् अन्य विषयों के अध्ययन को भी सार्थक रूप से प्रभावित करती है। अतः मूल्यांकन करते समय निदानात्मक पक्ष पर विशेष ध्यान देना जरूरी होगा और उसके अनुसार उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था उपयुक्त समय पर की जानी चाहिए।